पाठ 4. क्यों-क्यों लड़की

पाठ की भूमिका

इस पाठ का उद्देश्य बच्चों में समस्या के समाधान की क्षमता संबंधी कौशल विकसित करना है ताकि वे जीवन में आने वाली समस्याओं के समाधान से सकारात्मक रूप से निपटने की क्षमता विकसित कर सकें। एक आदिवासी बालिका की चारित्रिक विशेषताओं को उजागर करती हुई यह कहानी हमें संदेश देती है कि दृढ़ इच्छाशक्ति व चीज़ों को समझने-जानने की ललक होना हमारे लिए आवश्यक है।

पाठ का सार

यह कहानी आदिवासी क्षेत्र में पली-बढ़ी एक लड़की की है। इस कहानी की पात्र मोइना नाम की एक छोटी-सी लड़की है, जो बाबू की बकरियाँ चराती है। जिस प्रकार बच्चों के मन में तरह-तरह के सवाल उठते हैं, उसी प्रकार मोइना के मन में भी हज़ारों सवाल घूमते रहते हैं। सवाल पूछते रहने की वज़ह से ही उसका नाम 'क्यों-क्यों लड़की' पड़ गया। मोइना जो कुछ लेखिका से सीखती, वह दूसरे बच्चों को बताती। उसका मन और विचार स्वतंत्र हैं, वह किसी भी बात को बिना तर्क के स्वीकार नहीं करती। मोइना इस बात पर विश्वास करती है कि ज़रूरी नहीं आप किसी के द्वारा बताए हुए रास्तों पर ही चलें, आप अपनी मंज़िल तक पहुँचने के लिए अलग रास्ता चुन सकते हैं।

अध्यापन संकेत

- **मूल पाठ के लिए संकेत**

  बच्चे जिज्ञासु होते हैं। उनसे कुछ प्रश्न पूछें या उनसे प्रश्न बनाने को कहें। आदिवासी लोगों के रहन-सहन और जीने के ढंग के बारे में बताएँ। 'साक्षरता अभियान' के बारे में भी चर्चा करें।

- **अभ्यास प्रश्नों के लिए संकेत**
  - **मौखिक प्रश्नों, पहेलियों, पठित परिच्छेद** व **पाठ आधारित प्रश्नों** के अध्यापन संकेत हेतु **पृष्ठ संख्या 42** देखें।
  - घसीटना/भागना/बैठना/पहुँचना/रुकना–ये सब क्रियाएँ हैं। क्रिया के बाद 'कर' जोड़ने पर उनके अंत में लगा 'ना' हटा दिया जाता है। अन्य उदाहरण भी दें।

    विलोम शब्दों के बारे में समझाएँ। वाक्य शुद्ध, सटीक और छोटे हों, यह विशेष ध्यान रखें। अशुद्ध वाक्यों में त्रुटियों की ओर ध्यान दिलाएँ।

- **क्रियाकलाप के लिए संकेत**
  - प्रश्न-निर्माण अपने आप में भाषा समृद्धि की कला है। इससे बच्चों में तर्कशक्ति का विकास होता है।